19 24.02.26

Sem-V

Subject - Psychology
class - UG, Sem-V
Unit - 03, Clinical Assessment & Techiques.
Topic - Nature and Purpose of Clinical Psychology.
Date -
Name - Dr. Shyam Sundar Sharma.

Ques. :- नैदानिक आकलन (Clinical Assessment) के स्वरूप (Nature) का वर्णन करें।

Ans. :- नैदानिक मनोविज्ञान में नैदानिक आकलन उपचार की आधारशिला माना जाता है। किसी भी मानसिक रोग या व्यवहार सम्बंधी समस्या के उपयुक्त उपचार से पूर्व रोगी की मानसिक स्थिति, व्यक्तित्व, भावनात्मक दशा तथा सामाजिक पृष्ठभूमि का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक होता है। इसी अध्ययन को नैदानिक आकलन कहा जाता है।

नैदानिक आकलन की प्रकृति (Nature of Clinical Assessment) :- (1) वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रकृति :- नैदानिक आकलन वैज्ञानिक सिद्धांतों, मानकीकृत परीक्षणों एवं विश्वसनीय विधियों पर आधारित होता है।

(2) बहुआयामी प्रकृति :- नैदानिक आकलन में व्यक्ति के केवल एक पक्ष का नहीं बल्कि उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन निम्न रूपों में किया जाता है -
(i) बौद्धिक क्षमता
(ii) भावनात्मक स्थिति
(iii) व्यवहार पैटर्न
(iv) सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण इत्यादि।

(3) व्यक्ति केन्द्रित प्रकृति :- हर व्यक्ति की मानसिक संरचना अलग-अलग होती है। इस कारण नैदानिक आकलन सामान्यीकरण पर आधारित नहीं होकर व्यक्तिगत आकलन पर आधारित होता है।

P.T.O

(5) बहु-स्त्रोत आधारित प्रकृति :-

नैदानिक आकलन में रोगी के साथ-साथ परिवार, शिक्षक एवं सामाजिक स्त्रोतों के आधार पर किया जाता है।

(6) नैतिक एवं गोपनीय प्रकृति :-

इसके तहत रोगी से प्राप्त जानकारी को मनोवैज्ञानिकों द्वारा गोपनीय रखा जाता है और नैतिक मूल्यों का पालन किया जाता है।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि नैदानिक आकलन की प्रकृति बहुआयामी, व्यक्ति-केन्द्रित होती है इसलिए इसे मनोविज्ञान की रीढ़ मानी जाती है।